विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – चतुर्थ **दिनांक -11- 10-2020**

विषय -हिन्दी **विषय शिक्षक -पंकज कुमार**

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज पाठ -12 प्रतिज्ञा नामक कहानी के बारे में अध्ययन करेंगे।

एक बार एक गाँव में

एक महात्मा जी आए। उनका जीवन बहुत ही सरल और सादगी से पूर्ण था। उसकी वाणी में वाणी में ऐसा तेज था कि लोग उनके वचनों को अपने जीवन में उतारने का प्रयत्न करते थे।

महात्मा प्रवचन दे रहे थे। तभी एक आदमी वहाँ दौड़ता हुआ आया मैला -कुचैला बढ़ी हुई दाढ़ी, लाल-लाल आँखें। देखने से ही एक लुटेरा जान पड़ता था। महात्मा के पैरों में माथा टिकाकर कहने लगा महाराज मैने बहुत अपराध किया है। कई लोगों को लूटा है, यहाँ तक कि हत्याएँ भी की है, लेकिन अब इस ज़िन्दगी से उब चुका हूँ। मैं भी शांतिपूर्ण जीवन जीना चाहता हूँ ।मेहनत -मजदूरी करके ईमानदारी के साथ जीवन व्यतीत करना चाहता हूँ। अपने परिवारवालों के साथ रहना चाहता हूँ। महाराज! मैं अपने जीवन में बदलाव लाना चाहता हूँ। क्या कोई उपाय है? "

महात्मा ने ध्यान से उसकी तरफ देखा, फिर शांत और गंभीर वाणी में बोले," बेटा! तुम तो बहुत भले इंसान हो। तुम्हारे अंदर यह अवगुण कहाँ से आ गया? तुम लोगों को क्यों लूटते हो? "

महात्मा के स्नेहपूर्ण वचन को सुनकर, उस व्यक्ति की आँखों से झर-झर आँसू बहने लगे। वह कुछ बोल न सका।

महात्मा फिर बोले,“ बेटा! तुम प्रतिज्ञा करो कि आज से तुम लूटपाट नहीं करोगे,

न किसी को सताओगे, न झूठ बोलोगे। ऐसा करने से तुम्हारा जीवन बदल जाएगा।

बोलो, क्या तुम यह प्रतिज्ञा कर सकते हो? " उस व्यक्ति ने कहा,“ महाराज! मैं प्रतिज्ञा

करता हूँ। आज से मैं लोगों को लूटना छोड़ दूंगा। "

इस घटना के कुछ दिन बीत गए। एक बार फिर वहीं महात्मा कहीं पर प्रवचन कर

रहे थे। उस समय वहीं लुटेरा पुनः वहाँ आया। महात्मा के चरण छूए और हाथ जोडकर

बोला," महाराज! मैंने लूटपाट न करने की प्रतिज्ञा की थी, लेकिन मैं उस प्रतिज्ञा को

निभा की लेकिन नहीं पा मेरी रहा यह हूँ। आदत लोगों नहीं को, लूटना जा रही मेरी है। आदत क्या-करूँ सी? बन कृपा गई करके है। मैंने बहुत आप मुझे कोशिश कोई

?

दूसरा उपाय बताइए जिससे मैं अपने में सुधार ला सकू।

शेष कल अध्ययन करेंगे ।